वार्षिक रिपोर्ट

1 अप्रैल 2018 से 31 मार्च 2019

SADBHAVANA TRUST

समुदाय के बीच युवा महिलाओं एवं लड़कियों का नेतृत्व विकास

सूची

क्र.स.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	संस्था का परिचय	3
2.	समुदाय आधारित कार्य	4– 8
3.	महिला फिल्म यूनिट	8– 9
4.	संस्थागत क्षमता विकास	9– 10
5.	विशेष कार्यक्रम	11– 12
6.	परिणाम	12– 14
7.	उपलब्धियां	14– 15
8.	चुनौतियां	16
9.	सहयोगी संस्था	16
10.	सोशल मीडिया लिंक	17

1. संस्था का परिचयः

सद्भावना ट्रस्ट की स्थापना 1990 मे दिल्ली में स्थानीय सक्रिय कार्यकर्ताओं के एक ऐसे समूह द्वारा की गई जो जेण्डर एवं समता के सिद्धान्तों पर विश्वास करते हैं। और इस संस्था के पंजीकरण के 20 साल पहले से वे दिल्ली में वंचितों के साथ काम कर रहे थे। सद्भावना ट्रस्ट का उद्देश्य हैं, स्थानीय नेतृत्व ख़ास तौर पर महिलाओं एवं हाशिये पर खड़े समूहों का क्षमता का विकास करना।

सद्भावना ट्रस्ट 2009 से लखनऊ शहर की बस्तियों में वंचितों के साथ काम कर रही हैं। संस्था खासकर लड़कियों और महिलाओं के साथ जेण्डर आधारित हिंसा और व्यक्तित्व विकास पर नज़रिया निर्माण करके उन्हें नेतृत्वकारी भूमिका में लाने का काम करती है। साथ ही लड़कियों और महिलाओं में तकनीकी कौशल का विकास करते हुए उन्हें सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनने पर ज़ोर देती है। इसी कड़ी में संस्था समुदाय में महिला हिंसा के मुद्दे पर कानूनी पैरवी एवं महिलाओं को फिर से अपनी ज़िंदगी शुरू करने में मदद करने का काम करती हैं, ताकि महिलाओं की सामाजिक कामों में भागीदारी सुनिश्चित हो और वे अपने अधिकारों के बारे में जानें।

हमारा विज़न

एक ऐसे हिंसा मुक्त सामाज का निर्माण करना, जो संवैधानिक मूल्यों पर आधारित हो, समानता, शांती, भेदभाव से मुक्त, लैंगिक हिंसा से मुक्त और न्याय पर आधारित हो, जहां पर सभी इंसान को समान अवसर प्राप्त हो।

हमारा मिशन

वंचित समूहों की लड़कियों एवं महिलाओं का व्यक्तित्व और नज़रिया निर्माण करते हुए उन्हें नेतृत्व में लाना। तकनीकी कौशल से जोड़कर उन्हें सशक्त करते हुए आत्मनिर्भर बनाना। और रचनात्मक तरीके से समुदाय के मुद्दों पर जागरूक करने की प्रक्रिया से जोड़ना।

2. समुदाय आधारित कार्यः

सद्भावना ट्रस्ट ने लखनऊ शहर के 7 वार्ड (डालीगंज, अकबरनगर, बासमंडी, गढ़ीकनौरा, राधाग्राम, कैम्पल रोड गुलज़ारनगर) का चयन लड़कियों एवं महिलाओं के लिए तकनीकि कौशल, नेतृत्व विकास कार्यक्रम को संचालित करने हेतु किया हैं। ये 7 क्षेत्र के अन्दर लगभग 30 बस्तियां जुड़ी हुई हैं, जो मुख्य शहर से 10 से 15 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं। इन बस्तियों में ज़्यादातर हाशियाग्रस्त समुदाय के लोग निवास करते हैं। बस्तियों में ज़्यादातर लोग अपनी आजीविका के लिए आरी दरदोज़ी का काम, मज़दूरी, चिकनकारी, छोटा व्यवसाय जैसे सब्ज़ी का ठेला, चाय की गुमटी और सिलाई का काम करते हैं।

उपरोक्त क्षेत्रों की प्रत्येक बस्तियों में दो क्षेत्रिय वार्ड को मिला कर एक क्लेस्टर बना हैं इसी तरह संस्था द्वारा तीन क्लेस्टर हैं जिसमें 30 बस्तियां हैं।

- प्रत्येक क्लस्टर में लड़कियों का 10–10 मंच बना हैं (कुल 30 मंच) और हर मंच में 10 से 15 लडकियां जुड़ी हुई हैं। तीनों क्लस्टर को मिला कर लगभग 330 लड़कियां हैं।
- क्लस्टर का प्रत्येक समन्वयक माह में दो बार मंच की लड़कियों से मिलता हैं और लड़कियों को रूचिकर गतिविधियों से जोड़ता हैं।
- प्रत्येक मंच में 2 से 3 लीडर्स हैं जिन्होंने मंच में मोबलाईज़ेशन और मिनट्स लिखने की ज़िम्मेदारी लेना शुरू किया हैं। इनका वॉट्सएप्प ग्रुप भी बना हुआ हैं जिससे वह बैठक के बारे में एक दूसरे को जानकारी देती हैं।

क. नज़रिया लीडरशिप सेन्टर के बारे में–

सद्भावना ट्रस्ट के पिछले सभी कार्यक्रम के अनुभव से बनी सीख से हमने समुदाय कार्य में एक नया आयाम जोड़ा हैं। वो यह हैं कि संस्था द्वारा चलाया गया नेतृत्व विकास कार्यक्रम

समुदाय की लड़कियों के लिए काफी फायदेमंद हैं। जिसके लिए यह कार्यक्रम **"नज़रिया लीडरशिप सेन्टर"** के माध्यम से मोहल्ले के बीच संचालित किया गया है। यह सेन्टर सभी हाशियाग्रस्त समुदाय की महिलाओं एवं लड़कियों के लिए है जिन्हें तकनीकि कौशल के अवसरों से वंचित रखा गया हैं। यह सेन्टर गढ़ी कनौरा क्षेत्र में संचालित किया गया हैं। सेन्टर पर संचालित कार्यक्रम नीचे प्रस्तुत हैं।

- सेन्टर में लड़कियों की सहभागिता हेतु सदस्यता पंजीकरण प्रक्रिया का संचालन किया गया।
- **सेन्टर में पूरे साल संचालित गतिविधियां एवं सुविधाएं–** इन्टरनेट सुविधा, कम्प्यूटर प्रैक्टिस, फिल्म स्क्रिनिंग, प्रत्येक सप्ताह किस्से कहानियों का रूचिकर सत्र, मैगज़ीन रीडिंग/लायब्रेरी, अन्य रूचिकर दो– दो दिन की गतिविधियां।
- **सेन्टर पर संचालित होने वाले कोर्स–** कम्प्यूटर कोर्स, इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स, व्यक्तित्व विकास कोर्स/ सॉफ्ट स्कील्स, डिजिटल स्टोरी कोर्स, सोशल मीडिया, कार्टून कार्यशाला और करियर कॉन्सिलिंग।
- **सेन्टर पर संचालित गतिविधियों से लड़कियों का जुड़ाव–** वर्तमान में 110 लड़कियों ने सेन्टर में सदस्यता ली हैं और इनमें से 50 लड़कियों ने कोर्स हेतु रजिस्ट्रेशन कराये हैं। सेन्टर पर प्रतिदिन खेल के माध्यम से चर्चा, कम्प्यूटर अभ्यास, बुक रीडिंग, फिल्मिस्तान और नज़रिया आधारित सत्र (जेण्डर, पहचान, प्रजनन स्वास्थ्य, महिला हिंसा पर महिलाओं को जानकारी एवं उनकी गतिशीलता) चल रहे हैं।

ख. GBV केस और समुदाय से निकले महिला हिंसा के मुद्दे पर पहलः

पिछले एक साल में संस्था में महिला हिंसा के कुल 34 केस आये हैं। जिनमें से 15 केसों में कोर्ट पैरवी हेतु केस को स्थानिय संस्था को साझा किया गया जिसमें अब वह कोर्ट पैरवी का काम कर रहे हैं। और 19 केसों (14 केस घरेलू हिंसा, 3 केस दहेज उत्पीड़न, 1 केस चयन का अधिकार, 1 केस यौन उत्पीड़न) में संस्था द्वारा समुदाय स्तर पर महिला के साथ

सामाजिक, मानसिक और व्यक्तिगत स्तर पर सहयोग किया जा रहा हैं।

बिटिया केस 1– केस में वकील से बात करके केस को आगे ठोस रूप से ले जाने की प्रक्रिया चलाई गई। साथ ही लड़की को पुनः पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया हैं। वर्तमान में संस्था के सहयोग से लड़की 12वी कक्षा में पढ़ रही हैं।

बिटिया केस 2– सरकार की तरफ से मिलने वाले मुआवज़ा हेतु डीएम (उरई), कमिशनर (झांसी) और समाज कल्याण अधिकारी से बात करके उन्हें पत्र भेजा गया हैं। आवेदन की एक कॉपी प्रोवेशन अधिकारी को भी भेजा गया हैं। डीएम द्वारा पैसा मिलने का आदेश हो गया हैं, परन्तु अभी खाते में पैसा नही आया हैं। इसके लिए लगातार पैरवी की जा रही हैं। वर्तमान में लड़की नर्सिंग का कोर्स कर (कोर्स का तीसरा साल हैं) रही हैं जिसका सहयोग संस्था द्वारा किया जा रहा हैं।

सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में संस्था ने महिला हिंसा के काम में विशेषज्ञता एवं दिशा निर्देश देने हेतु विशेषज्ञ को चिन्हित किया हैं। जिसमें वह प्रति माह 2 दिन संस्था को महिला हिंसा (GBV) के मुद्दे पर विशेषज्ञता/परामर्श देती हैं।

ग. नेतृत्व विकास कार्यक्रमः

नेतृत्व विकास कार्यक्रम के तहत 18 लड़कियों का चयन किया गया, इस कार्यक्रम के मुख्य चार चरण (नज़रिया निर्माण, कम्प्यूटर व सूचना तकनीकी, समुदाय कार्य/फ़ील्ड एक्सपोज़र और डिजिटल स्टोरी एवं फोटोग्राफी) थे। जिसको लड़कियों एवं महिलाओं ने एक वर्ष में पूर्ण किया हैं। कार्यक्रम के अन्त में प्रमाण पत्र वितरण का कार्यकम आयोजित किया गया जिसमें क्षेत्रिय लीडर (सभासद, आशा, ए.एन.एम, आगनबाड़ी) और लखनऊ शहर की प्रभावशाली महिलाएं शामिल हुई। इस कार्यक्रम में लड़कियों द्वारा पैनल डिस्कशन, खेल के माध्यम से चर्चा, रोल प्ले व अन्य प्रस्तुतियों का संचालन किया गया। जिसमें उन्होंने तकनीकी

के माध्यम से अपनी नेतृत्व यात्रा का अनुभव समुदाय से आई अन्य लड़कियों के साथ साझा किया।

- नेतृत्व विकास कार्यक्रम के तहत 120 लड़कियों का इम्पैक्ट स्टडी सर्वे किया गया। इस सर्वे के ज़रिये संस्था को लीडरशिप बिल्डिंग प्रोग्राम को मापने का मौका मिला जैसे– कार्यक्रम की गुणवत्ता, कमी और लड़कियों पर कार्यक्रम का क्या असर हुआ हैं।

घ. समुदाय से उभरी युवा महिला नेत्रियां (YWL):

यह कार्यक्रम "**ग्लोबल फंड फॉर विमेन"** के वित्तीय सहयोग से समुदाय की युवा लड़कियों एवं महिलाओं द्वारा, समुदाय के बीच स्थानिय मुद्दों पर साझे रूप से आवाज़ उठाने का नेतृत्व तैयार कर रहा हैं।

- पिछले दो साल से इस कार्यक्रम में पूर्ण रूप से 12 लड़कियां जुड़ी हुई हैं। जिनके साथ मुद्दें आधारित कार्यशालाएं की गई हैं। जैसे– जेण्डर, यौनिकता, इंग्लिश क्लास, पितृसत्ता, घरेलू हिंसा और ज़मीनी मुद्दे पर फिल्म दिखा कर चर्चा करना।
- पिछले एक साल के स्वलेम प्रोग्राम से बनी सीख से संस्था ने इस साल प्रोग्राम में नई पहल की हैं। जिसके तहत संस्था द्वारा **YWL (युवा महिला नेत्रियां)** के साथ 16 दिवसीय टी.ओ.टी कार्यक्रम "**हम हैं लखनऊ लीडर्स"** आयोजित किया गया। जिसमें उन्होने निम्न कौशल पर अपनी पकड़ बनाई जैसे– रिपोर्ट राईटिंग, सम्प्रेषण क्षमता, सोशल मीडिया, कम्प्यूटर एडवांस कोर्स, कहानी लिखना, न्यूज़ लैटर बनाना, फोटोग्राफी, नज़रिया निर्माण और फील्ड में सत्रों का संचालन करना।
- टी.ओ.टी के उपरान्त 12 लड़कियों में से 7 लड़कियां जो फील्ड के कामों में दिलचस्पी रखती हैं, उन्हें तीन महीने के लिए समुदाय कार्य में उनकी क्षमता बढ़ाने हेतु इंटर्नशिप करने का मौका दिया गया।

- यह इंटर्नशिप तीन बिदुंओं पर आधारित था, सम्प्रेषण क्षमता, तकनीकी क्षमता और केन्द्रित मुद्दों पर पकड़ बनाना।
- तीन महीने में लड़कियों ने महिला हिंसा के मुद्दे पर कैंपेन किया और महिला हिंसा के मुद्दे पर अपनी क्षमता बढ़ाई।
- तीन माह के उपरान्त लड़कियों ने 8 मार्च को महिला दिवस के अवसर पर एक बड़े कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसका नेतृत्व उन्होंने स्वयं किया और अपने तीन माह के अनुभव बड़े प्लेट फॉर्म पर साझा किया।

ज. युवा मुद्दे पर नेटवर्किंगः

लखनऊ शहर में (3 अलग– अलग जगहों पर) युवा मेला का आयोजन किया गया। जिसमें

लखनऊ शहर से तकरीबन 2500 युवा (लड़के, लड़कियां) शामिल हुये। इस मेले को समुदाय से उभरी युवा महिला नेत्रियों (YWL) ने आकर्षक खेलों और रूचिकर गतिविधियों के माध्यम से चलाया। मनोरंजक खेलों के माध्यम से युवाओं के साथ लैंगिक भेदभाव, पितृसत्ता, प्रजनन स्वास्थ्य, रिश्ते, ख्वाहिशें और साथी संबंधों के मुद्दों पर चर्चा की गई।

3. महिला फिल्म यूनिटः

- फिल्म यूनिट को पिछले एक साल में कई अलग– अलग जगहों से फिल्मों के ऑर्डर मिले, साथ ही उन्होने अपनी क्षमता अनुसार ख़बर लहरिया (महिला मीडिया न्यूज़ ट्रस्ट) के तहत प्रतिमाह 20 न्यूज़ एडिट करने का काम भी किया। साथ ही

बाहरी संस्थाओं में ट्रेनिंग देने काम किया जिससे उनकी पहचान बनी। दिसम्बर माह से ख़बर लहरिया का कार्य बंद हो गया, अब वह स्वतंत्र रूप से फिल्म स्टूडियो संचालित करने की दिशा में कार्य कर रही हैं।

- फिल्म यूनिट के साथियों की तकनीकी क्षमता को मज़बूत करने के लिए अलग– 2 कार्यशालाएं की गई हैं। जैसे– फोटोग्राफी वर्कशॉप, वॉईस रिकॉर्डिंग, ऑडियो साउन्ड, डिजिटल स्टोरी वर्कशॉप, एडवांस लेवल शूटिंग और अडोब प्रीमियर प्रो CS6 की एडिटिंग वर्कशॉप, फेमिनिस्ट वाट्सएप्प फॉरवर्ड वर्कशॉप, इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स, प्रोविबो क्लास, अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित फिल्म फेस्टिवल में भागीदारी, बाहरी संस्थाओं का एक्सपोजर, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी फिल्मों का प्रर्दशन।
- फिल्म यूनिट की सबसे बड़ी उपलब्धि ये हैं कि वे स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए आत्मविश्वास में आये हैं। और उनके दो साथी जो पहले फिल्म यूनिट में जुड़ कर कार्य कर रहे थे अब उन्हे मुख्य धारा की मीडिया (लाईव टू डे) में काम करने का मौका मिला।

4. संस्थागत क्षमता विकासः

- संस्था के साथियों द्वारा निरंतर दिल्ली द्वारा संचालित सेन्टर का भ्रमण किया गया।
- निरंतर दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यक्रम पद्धति व पाठ्यक्रम राज्य स्तर सम्मेलन में संस्था से दो साथियों की भागीदारी रही।

- महिला हिंसा अमन नेटवर्क में संस्था के साथी पूरे साल होने वाली बैठकों में शामिल रहे।
- महिला नेटवर्क द्वारा होने वाले कार्यक्रम में भी भागीदारी रही।
- पिछले एक साल में इनलिंगुआ दिल्ली द्वारा आयोजित इंग्लिश के बेसिक और एडवांस कोर्स में समुदाय से 22 सदस्य जुड़े।

- **संस्थागत विकास कार्यशाला–** सद्भावना ट्रस्ट के तहत संस्था का समुदाय कार्य में फंडर द्वारा दिये गये आकंड़े और गुणवत्ता पर केन्द्रित गतिविधि **"कितना नम्बर किसको"** के माध्यम से कार्यकर्ताओं के बीच चर्चा की गई। जिसमें यह बात समझ में आई कि हम फंडर द्वारा दिये गये टारगेट पर फोकस करते हुये सिर्फ संख्या बढ़ाने पर काम करते हैं, और एक ही प्रोजेक्ट में बंध कर रह जाते हैं। फिर हम बाहरी परिवेश में उभरते नये मुद्दों की चर्चा और उसके संर्घष से छूट जाते हैं।
- **महिला मुद्दे पर नज़रिया निर्माण–** महिलाओं के मुद्दों पर 4 कार्यशाला (दो कार्यशाला लखनऊ में और दो कार्यशाला शहर से बाहरं) आयोजित की गई, जिसमें संस्था से एक साथी शामिल रही।
- **जेण्डर एट वर्क द्वारा ओ0डी0 कार्यशाला–** जेण्डर एटवर्क की वर्कशॉप में सद्भावना ट्रस्ट से दो साथी जुड़े। यह साथी पिछले 5 साल से इस नेटवर्क से लगातार जुड़े रहें हैं।
- संस्था के दो साथियों द्वारा दिल्ली स्थित मंज़िल सेन्टर का भ्रमण किया गया।
- सहयोग द्वारा युवा नीति पर आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला में सहभागिता रही।
- हमसफर द्वारा 498ए और 125 पर आयोजित राष्ट्रीय स्तर पर दो दिवसीय सम्मेलन में सहभागिता रही।
- वनांगना द्वारा एकल महिलाओं पर आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन में सहभागिता।
- राजीव गांधी फाउन्डेशन द्वारा **"सद्भाव"** पर आयोजित कॉन्फ्रेस में सहभागिता।
- किया द्वारा आयोजित **मेरी पंचायत मेरी शक्ति** कार्यक्रम में सहभागिता।
- ए.जे.डब्ल्यू.एस टीम द्वारा संस्था में विज़िट किया गया।
- दिप्ता जी द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला **"विकास की दुनियाँ का नया केन्द्र बिन्दू"** में सहभागिता रही।
- स्थानीय संस्थाओं द्वारा आयोजित स्वास्थ्य के मुद्दे पर चर्चा।
- सहयोग द्वारा परिवार नियोजन में पुरूषों की सहभागिता पर संगोष्ठी।
- दान उत्सव द्वारा यूथ सेलिब्रेशन के आयोजन में सहभागिता।
- एडवा द्वारा महिला मुद्दे पर बैठक।
- जागोरी संस्था द्वारा आयोजित काउंसलिंग पर 5 दिवसीय कार्यशाला।

5. विशेष कार्यक्रम:

क. महिला दिवस कार्यक्रम–

सद्भावना ट्रस्ट ने 8 मार्च 2019 को महिला दिवस के शुभ अवसर पर जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय युवा केन्द्र, में **"हम हैं लखनऊ लीडर्स" कार्यक्रम का सर्टिफिकेशन एवं युवती मेला** का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में लगभग 350 युवा लड़कियाँ एवं महिलाएं शामिल हुईं। और मुख्य अतिथि के रूप में करामत डिग्री कॉलेज की पूर्व प्रिसिंपल नूर ख़ान, सनतकदा की संस्थापक माधवी कुकरेजा, शाहीन सिद्दीक़ी, पारूल, जाज़बिया ख़ान और ठाकुरगंज क्षेत्र की पार्षद गीता पाण्डेय मौजूद रहीं। इस कार्यक्रम में समुदाय से नेतृत्व में उभरी लड़कियों ने अपनी ज़िन्दगी से जुड़े निर्णय, शादी के अतिरिक्त ज़िन्दगी के विकल्प और कम उम्र में हुई शादी के बाद भी उन्होंने खुद से नए मौके कैसे बनाएं हैं? इसका सफर उन्होंने सबके बीच साझा किया। कार्यक्रम को रूचिकर बनाने के लिए युवती मेला किया गया जिसमें कई रूचिकर खेल के माध्यम से लड़कियों के बीच चर्चा की गई। जिसका उद्देश्य था समाज में लिंग आधारित भेदभाव पर समझ बनाना।

ख. मुमकिन है..सर्टिफिकेशन कार्यक्रम–

15 सितंबर 2018 को सद्भावना ट्रस्ट ने ए0जे0डब्लू0एस0 के सहयोग से हाशिये पर खड़े समुदाय की लड़कियों के साथ चलाये जा रहे **"नेतृत्व विकास कार्यक्रम"** का प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम नेहरू युवा केन्द्र में संचालित किया गया। इस आयोजन में लगभग 175 युवा लड़कियां शामिल हुई।

कार्यक्रम में पैनल डिस्कशन व युवतियों द्वारा प्रस्तुत्तियां शामिल थी, जिसमें उन्होंने तकनीकी के माध्यम से अपनी नेतृत्व यात्रा का अनुभव साझा किया। इस कार्यक्रम के द्वारा लड़कियों ने विभिन्न स्टेक होल्डरों से अपने मुद्दों, आवश्यकताओं व अधिकारों तक पहुंचने के संसाधनों से संबन्धित चर्चा भी की।

ग. **महिन्द्रा सनतकदा लखनऊ फेस्टिवल 2019–**

सनतकदा पिछले 10 वर्षो से लखनऊ में महिन्द्रा के साथ अवधी संस्कृति को बरकरार रखने के लिए सालाना महोत्सव आयोजित करता चला आ रहा है। इस महोत्सव में हर वर्ष वो एक थीम के साथ महोत्सव का आयोजन करते हैं। उसी क्रम मे इस वर्ष महोत्सव की थीम थी **''हुस्न–ए–कारीगर–ए– अवध''**।

महोत्सव में सदभावना ट्रस्ट ने स्कूल/कॉलेज से 2000 युवाओं एवं बच्चों की सहभागिता कराई। जिसमें बच्चें कई सीखने सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ सके। साथ ही उन्हें इस महोत्सव में भारत के कई राज्यों से आयें दस्तकार, शिल्पकार, बुनकरों द्वारा बनायें सामान देखने को मिला। और वह क्रिया द्वारा चलाये गये रूचिकर सत्रों से जुड़े, इसी के साथ–साथ उन्होंन खेल, झूले, किस्सागोई, सांस्कृतिक कार्यक्रम, फिल्मिस्तान, पिक्चर गैलेरी और हेरिटेज वॉक का मज़ा लिया।

6. परिणामः

क. कार्यक्रम स्तर पर–

- हर क्लस्टर में लड़कियों का मंच बना जहां वह एक दूसरे के साथ घुलमिल कर, एक दूसरे की ज़िदंगी से सीख रही हैं।
- स्वेलम कार्यक्रम से जुड़ी लड़कियां ठोस कार्यक्रम से जुड़ी और उन्होंने अपनी क्षमतानुसार पहचान बनाई।

- वाई0डब्ल्यू0एल के अंदर फील्ड में मुद्दे को पहचानने और उस पर पहल करने का आत्मविश्वास बढ़ा हैं।
- समुदाय के बीच (गढ़ीकनौरा में) **नज़रिया लीडरशिप** सेन्टर स्थापित हुआ। जिसके प्रचार– प्रसार से संस्था की पहचान बनी और संस्था के काम का सीधा फोकस समुदाय के बीच हुआ।
- नेतृत्व विकास कार्यक्रम ख़ास individual लड़कियों पर फोकस था, परन्तु अब समुदाय/मोहल्ला केन्द्रित कार्यक्रम संचालित हैं।
- इम्पैक्ट स्टडी सर्वे द्वारा हम ट्रेनिंग प्रोग्राम से निकली लड़कियों का पाँच साल के ऑकड़े निकाल पाएं और सभी लड़कियों से पुनः सम्पर्क भी कर पाएं।
- तकनीकी जानकारी ने लड़कियों को अधिक आत्मविश्वास दिया हैं, अब वे अपने कामों में तकनीकी कौशल का अधिक से अधिक प्रयोग कर रही हैं।
- इसी के साथ नेतृत्व विकास कार्यक्रम से उभरा हमारा फिल्म यूनिट (समुदाय से उभरी युवा महिला फिल्म मेकिंग ग्रुप) जो एक एक्टिव रिसोर्स ग्रुप के रूप में सामने आया हैं। अब उन्हें अपने पैर पर स्वतंत्र रूप से खड़ा करने के लिए हम उनकी तैयारी करा रहे हैं।
- नेतृत्व कार्यक्रम के तहत किये गये इम्पैक्ट स्टडी से हमने सीखा कि अब हमें पुरानी लड़कियों के साथ क्या रूचिकर करना चाहिए? इसके लिए हमने लड़कियों को पुनः एक मंच पर लाने के लिए "**दंगल**" नाम का एक वॉट्सएप्प ग्रुप बनाया हैं जहां लड़कियां हर शनिवार और रविवार को किसी सामाजिक मुद्दे पर चर्चा करती है।

ख. संस्थागत स्तर परः

- संस्था में नये नियम लागू हो पाये हैं, संस्था में काम का तरीका बदला है, संस्था के कार्यो पर सीधा फोकस हुआ हैं।
- तीन नये साथी संस्था में जुड़े हैं (क्लस्टर कॉडिनेटर, कैशियर व प्रशानिक कार्य और सेन्टर संचालक)
- बाहरी संस्थाओं और स्वयं की संस्था द्वारा जो भी कार्यशालायें कराई गई उन सभी जानकारियों ने हमें हमारे काम में बहुत मदद किया हैं। और हम अपनी सीख को संस्था में कियान्वित कर पायें हैं।

- प्वॉइंट ऑफ व्यू संस्था द्वारा टीम का व्हॉट्सएप्प फॉरवर्ड बनाने की जो ट्रेनिंग हुई उसके ज़रिये टीम को एक नयी तकनीक के बारे में जानकारी मिली जो टीम के लिए बहुत उपयोगी है। इस सीख से हमने समुदाय की अन्य लड़कियों को यह प्रशिक्षण दिया हैं। आगे इस हुनर का इस्तेमाल करते हुये लड़कियां सामाजिक मुद्दे पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगी।
- प्रोविबो क्लासेस चली जो ख़ास तौर पर फिल्म यूनिट के लिए महत्वपूर्ण रहा। जिससे हमें संस्था के प्रबंधन और बिजनेस को संचालित करने का सही तरीका पता चला। इसी सीख से हमारा फिल्म यूनिट स्वतंत्र होने के लिए नये आयाम तक अपनी पहुंच बना रहा हैं। साथ ही ओपन फ्रेम प्लेटफॉर्म के ज़रिये दीपा धनराज से हमारे फिल्म यूनिट के साथियों को, नारीवादी नज़रिये से डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म बनाने का नया तरीका सीखने को मिला।

7. उपलब्धियां:

- संस्था द्वारा चलाया गया नेतृत्व विकास कार्यक्रम वंचित समुदाय की लड़कियों के लिए काफी असरदार सफर रहा हैं। जिसके तहत हर साल लगभग 20 से 25 लड़कियां अपने निजी जीवन में बदलाव ला पाई हैं। (लड़कियों में सम्प्रेक्षण की क्षमता बढ़ी है। लड़कियों ने घर में जल्द विवाह और जबरन विवाह रोकने के लिए आवाज़ उठाई है, और वे बाहर निकलकर अपनी जिंदगी से जुड़े नये विकल्प खोजने में सक्षम हो पाई है।) हमें लगता हैं कि हमारे नेतृत्व विकास कार्यक्रम का मॉडल (**नज़रिया निर्माण, कम्प्यूटर व सूचना तकनीकी, समुदाय कार्य/फ़ील्ड एक्सपोज़र** और **डिजिटल स्टोरी एवं फोटोग्राफी**) ने पिछले पांच सालों में सकारात्मक और मज़बूत मुक़ाम हासिल किया हैं। इससे लड़कियों की ज़िंदगी में जो बदलाव आये हैं इसकी झलक हमें इम्पैक्ट स्टडी से निकले आंकड़ों से पता चलता हैं, जो नीचे प्रस्तुत हैं।

इम्पैक्ट स्टडी से निकले बदलाव के मुख्य बिंदु:

हमने 2013 से 2017 तक नेतृत्व विकास कार्यक्रम से जुड़ी 120 लड़कियों का एक इम्पैक्ट स्टडी किया, जिसका विवरण एक नज़र में साझा किया जा रहा हैं।

विषय	लड़कियों की संख्या	विश्लेषण
तीन तलाक का मुद्दा	120	120 लड़कियों ने तलाक़ के जजमेंट को

		महिला के हक़ में बताया।
सोशल मीडिया	106	ये लड़कियां फेसबुक, वाट्सएप्प और मैसेंजर का इस्तेमाल अपनी जानकारी और मस्ती के लिए कर रही हैं।
लीडरशिप की समझ	47	लड़कियां कहती हैं कि लीडर वही हैं जो अपनी ज़िदगी का फैसला खुद करता हो और अपने फैसले से दूसरों को प्रेरित करता हो।
जेण्डर भेदभाव और शादी के मुद्दे पर समझ	82	लड़कियों ने जेण्डर आधारित हिंसा पर घर के अंदर और बाहर आवाज़ उठाई हैं। और अपनी शादी को रोकने के लिए परिवार के बीच अपनी बात को रखा। और शादी के अतिरिक्त अन्य विकल्प के बारे में अपनी राय दी।
पुलिस/थाने तक जाना	26	महिला हिंसा और समुदाय के मुद्दे पर लड़कियां थाने तक जाती हैं।
शिक्षा के मुद्दे पर समझ	45	वह लड़कियां जो परिवारिक स्थिति खराब होने के कारण डॉपआउट्स हुई थी उन्होंने अपना फिर से एडमिशन कराया।
नौकरी पेशे में	49	यह लड़कियां अलग–2 सेक्टर में नौकरियां कर रही हैं जैसे– एन.जी.ओ. प्राईवेट टीचर, कॉर्पोरेट सेक्टर, अकाउंटेंट, कॉल सेन्टर और नर्सिग का काम।

- नेतृत्व विकास कार्यक्रम से उभरा हमारा फिल्म यूनिट (वंचित समुदाय से उभरी युवा महिला फिल्म मेकिंग ग्रुप) जो हमारे कार्यक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धि हैं, और यह एक एक्टिव रिसोर्स ग्रुप के रूप में निखर कर सामने आया हैं। जो पिछले तीन साल के प्रशिक्षण से वर्तमान में ठोस रूप से खुद अपने पैरों पर खड़ा हुआ हैं। साथ ही वह राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी फिल्में दिखाने का मंच तैयार कर रहा हैं। पहले की अपेक्षा उनके आर्थिक स्थिति में बढ़ोत्तरी हुई हैं। और अब वह स्वतंत्र रूप से काम करने की तैयारी कर रही हैं।

8. चुनौतियां:

क. कार्यक्रम स्तर पर–

- पिछले साल फील्ड के कार्यकर्ता जिनका फील्ड का काम व्यवस्थित नही था और उनका काम बहुत व्यक्तिगत स्तर पर था। जिसके कारण संस्था के कामों में बिखराव आया।

ख. संस्थागत स्तर–

- कार्यालय की जगह बदलना और उसकी पूरी प्रक्रिया से जुड़ना हमारे लिए सफलता और चुनौती दोनों हैं।
- फंड न होने के कारण कोर्ट में चल रहे केसों में महिलाओं की मद्द करने हेतु किसी दूसरी संस्था को कोर्ट पैरवी के लिए केसों की साझेदारी की गई। अब संस्था पहले की अपेक्षा महिला हिंसा के खिलाफ कार्यक्रम प्रत्यक्ष रूप से नही चला रहा हैं। परन्तु हमारे फील्ड से जो केस आ रहे हैं उसको हम समुदाय स्तर पर देख रहे हैं।

9. सहयोगी संस्था:

- ए0जे0डब्ल्य0एस (न्यूयॉर्क)
- ग्लोबल फंड फॉर विमेन (यू.एस.ए)
- इनलिंगुवा (दिल्ली)

10. सोशल मीडिया लिंकः

- Website:- http://sadbhavanatrust.org.in
- Facebook:https://www.facebook.com/sadbhavanatrust.lucknow